Hindi Society Newsletter

VOL 09/1 3rd January 2009

FROM THE PRINCIPAL

नए साल की शुभकामनाएँ !

HAPPY NEW YEAR TO ALL OUR STUDENTS, PARENTS, TEACHERS AND VOLUNTEERS !

There is financial turmoil in the world. But life goes on as we look forward to welcoming 2009.

One of the best ways we can prepare ourselves to be ready for the emerging world situation is for all of us to improve our language ability even more. We should thus work towards bringing the teaching and learning of Hindi to greater heights.

At the Hindi Society and its Hindi Centres we thus begin yet another learning journey with a sense of excitement and enthusiasm. Along with **the inclusion of Hindi marks** as part of the normal school examination system has come a great deal of responsibility. To fulfil this heavy responsibility the procedures for examination and marking have been streamlined and we have also embarked, working together with the BTTSAL, on an ambitious project to prepare **localised teaching materials** for all levels.

Apart from this, we also hope to introduce a series of activities to improve the oral skills of our students. We wish to take Hindi out of the classroom into the daily lives of our students. We plan to conduct **Speech & Debate competitions, Speech & Drama Classes, Show-and-Tell** activities also.

Starting from this issue our regular newsletter will also have articles of interest to students and links to websites which have well written Hindi stories. From the next issue we wish to email you our newsletter so please confirm your email address with your child's class teacher.

This is a **time of transition** for us also as we work to implement all the changes. At all times we have our **students' best interests** at heart. We look for your support and understanding. Some things may take longer than planned but rest assured that we will do our best to help our children.

The **new Course Books** may be a cause of concern to some; please do not worry. Our teachers will keep you informed on all developments. Above all, new activities are being introduced in the classroom. Students' involvement in these will benefit them and also improve examination scores.

S Tiwari

कामयाबी की मंज़िल हासिल करने की चाह सभी रखते हैं, परंतु कई बार योग्यता होने के बावजूद भी वे मंज़िल से दूर रह जाते हैं। इसका प्रमुख कारण है व्यक्तित्व में मौजूद कुछ कमियाँ। व्यक्तित्व के दो पहलू होते हैं सकारात्मक व नकारात्मक सोच। सकारात्मक रवैया अपनाने वाले व्यक्ति ही जीवन में सभी बाधाएँ पार कर कामयाबी की मंज़िल तक पहुँच पाते हैं। यह राह बिल्कुल मुश्किल नहीं है, अपने व्यवहार में परिवर्तन लाकर हम अपना व्यक्तित्व आकर्षक एवं सफल बना सकते हैं। मुश्किलें तो जीवन का अभिन्न अंग हैं,हमें मुश्किल घड़ी में निराश होने की अपेक्षा सकारात्मक सोच को अपनाने चाहिए।

अपने व्यक्तित्व को पहचानने के लिए अगले पृष्ठ पर दिए गए आसान से प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आवश्यकतानुसार परिवर्तनों को अपना कर अपने व्यक्तित्व में निखार लाइए।

Watch out for the new '**Enrichment Corner ' in our Newsletter** where we will provide quotes, poems, phrases which the students can use for **enriching their composition** writing. We invite our students to contribute their efforts. Students can scan their hand written material and send it by mail to hindi@singnet.com.sg

मेरे अच्छे पापा

अविनाश की परवरिश उसके पिताजी अकेले ही कर रहे थे। कुछ वर्षों पूर्व ही उसकी माताजी का देहावसान हुआ था। अविनाश के पिताजी उसका पूरा ध्यान रखते थे।

लेकिन कई बार जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे अनदेखी हो ही जाती थी। अविनाश के जन्मदिन पर उसके पिताजी उसे घूमने-फिरने के लिए ले जाते थे। उसके लिए नए कपड़े एवं खिलौने खरीदते थे। इस बार जन्मदिन के एक दिन पूर्व ही पिताजी ने उसे सारे उपहार दे दिए क्योंकि अगले दिन वे कामकाज की मजबूरी के कारण व्यस्त थे।

अविनाश अपने पिताजी की व्यस्तताओं को समझता था। उसे मालूम था कि पिताजी पर घर के अलावा बाहर के कामों का भी उत्तरदायित्व है।

सोने के पूर्व वह प्रार्थना कर ही रहा था कि उसके पिताजी दबे पाँव पूजा-घर में आए और आवाज़ सुनकर ठिठक गए। अविनाश कह रहा था, "हे भगवान मेरे पापा बहुत अच्छे हैं। मैं चाहता हूँ कि बड़ा होकर मैं पापा जितना अच्छा आदमी बनूँ।"

अविनाश तो प्रार्थना करके सो गया परंतु पिताजी की आँखों से अनवरत आँसू बहते रहे। आसमान की ओर सिर उठा कर दोनों हाथ जोड़ते हुए उन्होंने कहा, "हे भगवान, मेरा बेटा मुझे जितना अच्छा मानता है, तुम मुझे उतना अच्छा बना देना।"

PERSONALITY QUIZ

इन प्रश्नों के उत्तर हाँ, ना, कभी-कभी में दीजिए। हर उत्तर के अंक भी लिखिए। अंक इस प्रकार हैं - हाँ(1), कभी-कभी(2), ना(3)।

1. क्या आप दोस्ती करने में पहल करते हैं ?
2. मुसीबत के समय क्या धैर्य के विचार आते हैं ?
3. क्या आप अपनी कमियों को सुधारने की कोशिश करते हैं ?
4. क्या आप सीमित दायरे में रहते हैं ?
5. क्या आप आत्मविश्वासी हैं ?
6. क्या आप दूसरों के प्रति सहयोगात्मक व्यवहार अपनाते हैं ?
7. क्या आप चुनौतियों को स्वीकारते हैं ?
8. क्या आप समय-समय पर अपने आपको सराहते हैं ?
9. क्या आप अपने अनुभवों को दूसरों के साथ बाँटते हैं ?
10. क्या आप केवल भाग्य में विश्वास रखते हैं कर्म पर नहीं ?

Count your score and know your personality.

10-12
आपकी सोच सकारात्मक है और कामयाबी सदैव आपके कदम चूमेगी

13-20
आप अपने व्यक्तित्व को सुधारिए अन्यथा कहीं नकारात्मक विचार आपके ऊपर हावी न हो जाएँ

21-30
अभी भी समय है, संभल जाओ, अभी से अपनी नकारात्मक सोच को बदल डालो

For Hindi stories go to webdunia.com

ENRICHMENT CORNER

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होयगी, बहुरी करेगा कब॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पन्थी को छायाँ नाही फल लागे अति दूर॥

- उद्यम ही सफलता की कुंजी है।
- उत्कृष्ट मनुष्यों को उनका असाधारण चरित्र प्रतिष्ठा देता है, उनका कुल नही।
- स्वस्थ शरीर आत्मा का अतिथि भवन है और अस्वस्थ शरीर इसका कारागार।
- पुरुषार्थ का सहारा पाकर ही भाग्य आगे बढ़ता है।